भुज गुजरात में "वानिकी में नवीन तकनीक एवं कृषि वानिकी" विषय पर वन विज्ञान केंद्र राजकोट, गुजरात के अंतर्गत दिनांक 28 नवम्बर, 2016 से 30 नवम्बर, 2016 तक तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन

शुष्क वन अनुसंधान संस्थान , जोधपुर द्वारा वन विज्ञान केंद्र, राजकोट, गुजरात के अंतर्गत " वानिकी में नवीन तकनीक एवं कृषि वानिकी " विषय पर दिनांक 28.11.16 से 30.11.16 तक तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन भुज, गुजरात में किया गया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में कच्छ पश्चिम फॉरेस्ट डिवीजन , कच्छ पूर्व फॉरेस्ट डिवीजन , बनी ग्रासलेंड डिवीजन , सामाजिक वानिकी डिवीजन, कच्छ एवं गांधीनगर रीसर्च डिविजन वन मंडलों के 58 कार्मिक जिसमें क्षेत्रीय वन अधिकारी (RFO), वनपाल (Forester), वनरक्षक (Forest guard) इत्यादि शामिल थे तथा 18 किसानों सहित कुल 76 प्रशिक्षणार्थियों ने भाग लिया। वन चेतना केंद्र , भुज में आयोजित इस कार्यक्रम के प्रथम दिन प्रशिक्षण कार्यक्रम का परिचय देते हुए श्री उमाराम चौधरी, भा.व.से., वन संरक्षक एवं प्रभागाध्यक्ष, कृषि वानिकी एवं विस्तार ने वन विज्ञान केंद्र का उद्देश्य बताते हुए कहा कि शुष्क वन अनुसंधान संस्थान , वन विभाग एवं विश्वविध्यालय , द्वारा किए गए अनुसंधान तथा अन्य अनुसंधान , पणधारियों (stakeholders), वन विभाग एवं किसानों तक पहुंचे यही वन विज्ञान केंद्र का उद्देश्य है। उन्होने तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का जिक्र करते हुए बताया कि भूमंडलीय तापमान में बढ़ोतरी (Global Warming) और जलवायु परिवर्तन जैसे पर्यावरणीय विषयों के संदर्भ में वानिकी में दरपेश आ रही नयी-नयी चुनोतियों के मद्देनजर यह आवश्यक है कि नए अनुसंधान और तकनीक को अपनाया जाए , इसके लिए प्रशिक्षण आवश्यक है, इसलिए वन विज्ञान केंद्र, राजकोट के अंतर्गत यह कार्यक्रम रखा गया है।

उदघाटन सत्र में शुष्क वन अनुसंधान संस्थान , जोधपुर के समूह समन्वयक (शोध) , डॉ टी.एस.राठौड़ ने संस्थान (आफरी) द्वारा किए गए अनुसंधान के मुख्य बिन्दुओं की प्रस्तुतीकरण के माध्यम से जानकारी दी । डॉ.राठौड़ ने अपने प्रस्तुतीकरण में अनुसंधान के विषयों , विकसित तकनीक, पौधारोपण सामग्री सुधार , नीम, अरडू, रोहिड़ा, सागवान, खेजड़ी इत्यादि वृक्षों के वृक्ष सुधार कार्यक्रम , जैव उर्वरकों का उपयोग (विशेषकर पौधशाला में) विकट परिस्थितियों वाले स्थलों (stress sites), विस्तार गतिविधियों इत्यादि से संबन्धित जानकारी दी।

इस अवसर पर श्री एल.जे.परमार , उप वन संरक्षक , (प.)भुज ने प्रशिक्षणार्थियों को प्रशिक्षण में विचार-विमर्श (Interaction) के माध्यम से जानकारी लेने और चन्दन तथा अन्य कृषि वानिकी से संबंधित जानकारी कि आवश्यकता प्रतिपादित की ।

उप वन संरक्षक , कच्छ विस्तार डिवीजन भुज (D.C.F., Kutch Extension Division, Bhuj), डॉ. बी.सुचिन्द्रा , भा.व.से. ने बताया कि अनुसंधान से वानिकी में बदलाव लाया जा सकता है। उन्होंने विभिन्न कृषि वानिकी प्रजातियों का जिक्र करते हुए ऐसी कृषि वानिकी तकनीक को आगे लाने कि आवश्यकता बताई जिससे कम समय में अधिक उत्पादन मिल सके। उनहोंने कृषि वानिकी को किसानों तक पहुंचाने की भी आवश्यकता बताई।

इस अवसर पर समारोह के मुख्य अतिथि एवं मुख्य वन संरक्षक , भुज, श्री ए.ओ.शर्मा. भा.व.से. ने सूखा क्षेत्र की परिभाषा बताते हुए कच्छ क्षेत्र में अनार जैसे फलों कि बागवानी का जिक्र करते हुए अनुसंधान की गहराई तक जाने का आहवान किया। श्री शर्मा ने कृषि वानिकी में गुग्गल , इस क्षेत्र में घास एवं चारे की तंगी , "बनी " घास क्षेत्र , नर्सरी तकनीक , शुष्क क्षेत्र संबंधित प्रजातियों की तकनीक , चन्दन इत्यादि से संबन्धित अनुसंधान जानकारियों की आवश्यकता प्रतिपादित की। श्री शर्मा ने गुजरात में वानिकी में अपनायी तकनीकों " (Adapted techniques in Forestry in Gujarat) " पर संभाषण देते हुए बताया कि नयी तकनीक अपनाने एवं बदलाव लाने में समय लगता है लेकिन प्रयोगशाला से ज़मीन तक (Lab to Land) के कार्यक्रम होने चाहिए तथा वन कार्मिकों (Field staff) को इन नवीन तकनीक के प्रति सचेत करने के लिए इस तरह के प्रशिक्षण कार्यक्रम जरूरी है। उन्होंने प्रशिक्षकों के प्रशिक्षण (Training of Trainees-TOT) की भी आवश्यकता बताई । उन्होंने प्रशिक्षणार्थियों से आहवान किया कि वे प्रशिक्षण से मिलने वाली जानकारी का क्षेत्र में उपयोग करें। उन्होंने सूचनाओं को प्रसारित करने हेतु सूचना प्रौध्योगिकी के उपयोग का भी आहवान किया।

इस अवसर पर आफरी के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. जी.सिंह ने अपने उदबोधन में बताया कि आवश्यकता आविष्कार की जननी है , आवश्यकता ज्यादा होती है तो नवाचार (Innovations) होते जाते है। डॉ. जी. सिंह ने शुष्क क्षेत्रों के विस्तार की जानकारी देते हुए बताया कि मृदा जैसे संसाधनों को मौके पर संरक्षित किया जा सके ऐसी विधियाँ अपनानी चाहिए।

उदघाटन सत्र के कार्यक्रम का संचालन , कृषि वानिकी एवं विस्तार प्रभाग के वैज्ञानिक-बी , डॉ. बिलास सिंह ने किया।

इसके बाद डॉ. टी.एस.राठौड़ ने "वानिकी में गुणवत्तायुक्त पौध सामग्री के उत्पादन (Production of quality seedling material in forestry) विषय पर अपने संभाषण में बीज प्राप्त करने , प्रतिनिधि धन वृक्ष (Candidate Plus Tree-C.P.T.), जैव उर्वरक , नाइट्रोजन फिक्सेशन (Nitrogen fixation), जैविक खाद (aerobic, anaerobic), चन्दन के पौधे एवं इसके संवर्धन के बारे में विस्तृत और रुचिपूर्ण जानकारी प्रदान की।

इसके बाद डॉ. जी.सिंह ने मृदा एवं जल संरक्षण के माध्यम से वन उत्पादकता में वृद्धि (Enhance forest productivity through soil and moisture conservation) विषय पर संभाषण देते हुए मृदा एवं जल संरक्षण और वनीकरण में वर्षा जल संग्रहण के बारे में बताते हुए सीढ़ीनुमा मेड़, समोच्च वनस्पति बाधाएँ (Contour Vegetative Barriers), ट्रेंच खेती , कंटूर ट्रेंच, समोच्च मेड़ बंदी , समोच्च पत्थर मेड़बंध , कणाबंदी, वर्षा जल संग्रहण के महत्व , विधियों, वर्षा जल संग्रहण एवं उत्पादकता , जल निकासी उपचार , स्थायी अवरोध , गेबियन (Gabian) प्राचीन खेती की खड़िन प्रणाली, खेत तलावडी (Farm Pond), स्व स्थाने वर्षा जल संग्रहण, जल एवं पोषक तत्वों के नुकसान में संबंध के बारे में जानकारी दी।

कार्यक्रम में आगे कृषि वानिकी एवं विस्तार के डॉ. बिलास सिंह ने " शुष्क क्षेत्रों में कृषि वानिकी के लाभ (Benefits of agroforestry in dry regions) के बारे में जानकारी दी ।

कार्यक्रम के दूसरे दिन क्षेत्र भ्रमण रखा गया जिसमें सर्वप्रथम प्रशिक्षणार्थियों को आयुर्वन मोचिराई (Aayurvan Mochirai) का भ्रमण कराकर वहाँ व्यवस्थित रूप से रोपी गयी विभिन्न औषधीय प्रजातियों की जानकारी दी गयी। इसके बाद शुष्क वन अनुसंधान संस्थान, जोधपुर द्वारा लगाए गए अनुसंधान क्षेत्र, गुग्गल तथा वानिकी चरागाह (सिल्वीपेस्टोरल) वृक्षारोपण का भ्रमण कर गुग्गल तथा सिल्वीपेस्टोरल में घास एवं गूँदी , खेजड़ी एवं बेर जैसी चारा वृक्ष प्रजातियों की जानकारी दी गयी। इस भ्रमण कार्यक्रम में प्रभागाध्यक्ष, श्री उमाराम चौधरी एवं डॉ. बिलास सिंह ने प्रशिक्षणार्थियों को भ्रमण करवाकर जानकारी उपलब्ध कराई।

मध्याहन पश्चात प्रशिक्षणार्थियों ने केंद्रीय रुक्ष क्षेत्र अनुसंधान संस्थान , जोधपुर के क्षेत्रीय कार्यालय कुकुमा का भ्रमण किया। जहां पर उन्हे अजोला चारा प्रजाति , केक्टस आदि की जानकारी दी गयी। डॉ. रामनिवास , विषय विशेषज्ञ , बागवानी , ने ये जानकारी दी। प्रधान वैज्ञानिक एवं CAZRI रीज़नल रीसर्च सेंटर , भुज के प्रभारी डॉ. देवीदयाल ने प्रशिक्षणार्थियों को संबोधित कर कच्छ क्षेत्र की वर्षा , मृदा परिस्थितियों , लवणता, क्षार, भू-जल, भूमि के ढलान , कृषि क्षेत्र, घास क्षेत्र आदि से संबंधित जानकारी दी।

प्रशिक्षण के तीसरे दिन डॉ. देवीदयाल ने कच्छ क्षेत्र में सिल्वीपेस्टोरल मॉडल पर संभाषण में बताया कि प्रकृति में हमेशा सिल्वीपेस्टोरल ही मिलता है , उन्होंने कच्छ क्षेत्र के लिए घास एवं वृक्ष प्रजातियों की जानकारी दी। डॉ. शमशुद्दीन एम. वैज्ञानिक काजरी (Regional Research Center) भुज ने कच्छ क्षेत्र के क्षारीय बंजर भूमि प्रबंधन (Saline Waste Land Management in Kutch Area) पर संभाषण दिया।

इसके बाद कृषि वानिकी एवं विस्तार प्रभाग के प्रभागाध्यक्ष एवं वन संरक्षक श्री उमाराम चौधरी, भा.व.से. ने अपने संभाषण में वनों से प्राप्त होने वाले प्रत्यक्ष एवं परोक्ष लाभों (Tangible and Intangible benefits from forests) की जानकारी कराई।

तत्पश्चात श्री ए.सी.पटेल, उप वन संरक्षक (पूर्व), भुज ने वन क्षेत्र में जल ग्रहण क्षेत्र प्रबंधन (Watershed Management In Forest Area) पर संभाषण में जल ग्रहण क्षेत्र प्रबंधन के विभिन्न पहलुओं कि जानकारी दी।

तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम के समापन सत्र के प्रारम्भ में कृषि वानिकी एवं विस्तार प्रभाग के प्रभागाध्यक्ष श्री उमाराम चौधरी , भा.व.से. ने तीन दिवसीय गतिविधियों का ब्योरा प्रस्तुत किया। सेवानिवृत्त उप वन संरक्षक , श्री एन.के.नंदा ने कहा कि प्रशिक्षण के लिए ज्ञान को क्रियान्वित करें। इस अवसर पर प्रशिक्षणार्थियों ने भी फीड-बैक के रूप में अपने विचार रखें। उप वन संरक्षक डॉ. बी.सुचिन्द्रा ने इस अवसर पर अपने उदबोधन में कहा कि प्रशिक्षण के विषय प्रासंगिक थे, नर्सरी का बुनियादी प्रशिक्षण अग्र पंक्ति के कार्मिक (front line staff) तक पहुँचना चाहिए। अनुसंधान संस्थान में भी अग्र पंक्ति के कार्मिक (front line staff) को प्रशिक्षण दें । उन्होंने कहा कि वानिकी अलग-अलग क्षेत्रों की अलग-अलग होती है, अतः विचार-विमर्श भी होना चाहिए। उप वन संरक्षक श्री ए.सी.पटेल ने नर्सरी में गुणवत्ता सुधार हेतु नर्सरी तकनीक जैसे

विषयों पर हुए प्रशिक्षण कार्यक्रम को खूब उपयोगी बताया तथा कहा कि प्रशिक्षण से exposure मिला और प्रशिक्षणार्थी लाभान्वित हुए। समापन सत्र के मुख्य अतिथि श्री एल.जे.परमार , उप वन संरक्षक (प.), भुज ने अपने उदबोधन में कहा कि प्रशिक्षण में आपस में विचार-विमर्श हुआ, चन्दन जैसी प्रजाति के बारे में बताया गया तथा जागृति (ज्ञान) हुई। उन्होंने कहा कि अब समय आ गया है कि हम अनुसंधान को जमीनी स्तर पर लेकर आए। उन्होंने सभी प्रशिक्षणार्थियों का आहवान किया कि वे भी जागरूक रह कर नयी चीजों की जानकारी लेते रहें। डॉ. बिलास सिंह , वैज्ञानिक-बी ने सभी का आभार प्रकट किया। समापन सत्र का संचालन डॉ. बिलास सिंह ने किया।

इस प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन एवं व्यवस्था वन विज्ञान केंद्र , राजकोट के प्रभारी डॉ. बिलास सिंह ने की, जिसमें श्री महिपाल विशनोई एवं श्री तेजाराम का विशेष सहयोग रहा।